

## शैक्षणिक प्रदर्शन और पारिवारिक वातावरण के बीच संबंध

छाया बंसल<sup>1\*</sup>, डॉ. शिवकांत चतुर्वेदी<sup>2</sup>

1 रिसर्च स्कॉलर एम. ए. इकोनॉमिक्स, एम. ए. सोशियोलॉजी, एम. एड., शिक्षा विभाग, जे. एस.  
यूनिवर्सिटी, शिकोहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

gargchhaya1983@gmail.com

2 सलाहकार प्रोफेसर : एम. एससी., पी. एच. डी. शिक्षा विभाग, जे. एस. विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

**सार:** यह एकल और संयुक्त परिवारों के उच्चतर माध्यमिक छात्रों के बीच रचनात्मक, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध का पता लगाने का प्रयास करता है। शिक्षा का एक सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य विद्यार्थियों को एक स्वस्थ आत्म-अवधारणा विकसित करने में मदद करना है, जो एक शक्तिशाली मध्यस्थ और यहाँ तक कि शैक्षणिक सफलता की नींव के रूप में भी काम कर सकती है। अपनी जटिलता के बावजूद, शैक्षणिक आत्म-अवधारणा आत्म-अवधारणा से जुड़ी हुई है।

**मुख्य शब्द:** रचनात्मक, भावनात्मक, बुद्धिमत्ता, शैक्षणिक, सामाजिक।

-----X-----

### 1. परिचय

छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन को लंबे समय से उनके शैक्षिक अनुभव का एक महत्वपूर्ण घटक माना जाता रहा है। इससे बच्चे अधिक अध्ययन और सीखने के लिए प्रेरित होते हैं। कोई व्यक्ति नई जानकारी को कितनी अच्छी तरह जानता है और उसका कितना अच्छा उपयोग कर सकता है, यह उसकी योग्यता का मापदंड है। "शैक्षणिक उपलब्धि" शब्द का अर्थ किसी वार्षिक परीक्षा में उच्च अंक या औपचारिक शिक्षा के संदर्भ में किसी विशेष विषय में प्रदर्शित महारत हो सकता है। छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन को मापने के सबसे लोकप्रिय तरीके उनकी शैक्षणिक या शैक्षिक आयु, उपलब्धि गुणांक, या किसी विशेष विषय में सफलता गुणांक है।

उपलब्धि में छात्र की क्षमता और प्रदर्शन शामिल है; यह बहुआयामी है; यह मानव विकास और संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक और शारीरिक वृद्धि से गहराई से जुड़ी है; यह बच्चे की संपूर्णता का प्रतिनिधित्व करती है; यह केवल अलग-अलग घटनाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि समय के साथ

और विभिन्न चरणों में, छात्र की शैक्षिक यात्रा से लेकर उच्चतर माध्यमिक शिक्षा और पेशेवर जीवन तक, प्रकट होती है (स्टाइनबर्गर, 1993)। उपलब्धि अनुभव के माध्यम से अर्जित ज्ञान और क्षमताओं को दर्शाती है, जो किसी विशिष्ट विषय में प्राप्त योग्यता या प्रदर्शन की डिग्री को दर्शाती है।

बच्चों के शैक्षिक और व्यावसायिक विकास में परिवार प्राथमिक संस्था है। परिवार एक व्यापक कार्यात्मक इकाई है, जो किसी भी समुदाय और संस्कृति में सबसे महत्वपूर्ण संस्थाओं में से एक है। परिवार वह प्रमुख संस्था है जो बच्चे की जैविक आवश्यकताओं को पूरा करने, उनके विकास का मार्गदर्शन करने और संस्कृति का संचार करने के लिए ज़िम्मेदार है। परिवार एक मौलिक सामाजिक संस्था है। नवजात शिशु अपने माता-पिता की करुणा और देखभाल में अपना जीवन शुरू करता है। एक बच्चे का परिवेश उसके शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित करता है। प्रत्येक बच्चा एक निश्चित स्थान और समय पर परिवार में जन्म लेता है। उसका पालन-पोषण एक निश्चित वातावरण में होता है। यह गहनतम और व्यक्तिगत जुड़ावों को पोषित करने के लिए अनुकूल होता है। एक बच्चा परिवार के भीतर अच्छे और बुरे, सच और धोखे, तथा आलस्य और परिश्रम के बीच अंतर करना सीखता है।

माता-पिता बच्चे के व्यक्तित्व के विकास को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। घर का अनुकूल वातावरण और बच्चे के प्रति माता-पिता का उचित व्यवहार शैक्षणिक प्रदर्शन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। माता-पिता के दृष्टिकोण किशोरावस्था में व्यवहारिक झुकाव को प्रभावित करते हैं। एंडरसन ने पाया है कि बच्चों के साथ बातचीत में वयस्कों द्वारा प्रदर्शित कुछ व्यवहार पैटर्न और व्यक्तित्व लक्षण समय के साथ बने रहते हैं। ये वयस्कों के बच्चों के साथ व्यवहार करने के तरीके को प्रभावित करते हैं। माता-पिता और बच्चे के बीच का रिश्ता व्यक्ति के सामाजिक एकीकरण में एक महत्वपूर्ण कारक है। माता-पिता से अपेक्षा की जाती है कि वे एक अनुकूल, आनंदमय, लोकतांत्रिक, पारदर्शी और पोषणकारी वातावरण का निर्माण करें, जिससे बच्चे अपनी अंतर्निहित क्षमता के अनुसार विकसित हो सकें और सामाजिक और पारस्परिक कौशल विकसित कर सकें। एक प्रतिकूल वातावरण किशोरों के विकास में बाधा डाल सकता है।

## 2. साहित्य की समीक्षा

**गिरि, डॉ. दिलीप (2014).** मूल्य और महत्ता के विषय पर ज्ञान अर्जन मूल्य को किसी वस्तु के मौद्रिक मूल्य, भावनात्मक मूल्य, बहुमूल्यता या दुर्लभता के रूप में परिभाषित किया जाता है। इसका अर्थ यह है कि मूल्य एक आचार संहिता है। ऊर्ध्व के अनुसार, "मूल्य का मुख्य अर्थ मूल्य निर्धारण, सम्मान, मूल्यांकन और आकलन करना है।" परिणामस्वरूप, मूल्य वे दृष्टिकोण हैं जो वस्तुओं का मूल्यांकन

करते हैं और वे कारक भी हैं जो लोगों के कार्य करने के तरीके को प्रभावित करते हैं। मूल्य, अपनी सबसे बुनियादी परिभाषा में, वह सब कुछ है जिसे कोई भी व्यक्ति पसंद करता है या आनंद ले सकता है क्योंकि उसे पसंद किया जाता है, सम्मान दिया जाता है, सम्मान की चाहत होती है, या अन्यथा उसकी सराहना की जाती है। संतुष्टि जीवन से जो आप चाहते हैं उसे पाने की वास्तविक अनुभूति है।

**बन्ज़ा नसोमवे-ए-नफंकवा (2023)** यह शोध उन बढ़ते प्रमाणों में शामिल है जो बताते हैं कि माता-पिता का अलगाव बच्चों के मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य को कैसे प्रभावित करता है। यह शोध किंशासा के विभिन्न स्कूलों में छात्रों के प्रदर्शन पर स्कूल स्वास्थ्य के एक प्रतिनिधि के रूप में केंद्रित है। इसका उद्देश्य उन बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि का मूल्यांकन करना है जिनके माता-पिता अलग रह रहे हैं और उन बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि का मूल्यांकन करना है जिनके माता-पिता साथ रह रहे हैं। इस तुलना का उद्देश्य यह निर्धारित करना है कि तलाक छात्रों की स्कूल में सफलता की क्षमता को कैसे प्रभावित करता है। इस उद्देश्य से, किंशासा के दो स्कूलों, ग्रुप सोलेयर डू मोंट-अम्बा और कॉलेज सेंट बार्थलेमी, में माध्यमिक विद्यालय के अपने अंतिम वर्ष के 241 छात्रों के बीच एक सर्वेक्षण किया गया। सर्वेक्षण में दस्तावेजी तकनीकों को एक प्रश्नावली के साथ जोड़ा गया, जिसे अलग हुए माता-पिता के बच्चों की पहचान करने के लिए डिज़ाइन किया गया था।

**ज़िंग, जुओरान। (2023)** शैक्षणिक प्रदर्शन छात्रों के भविष्य के वेतन और जीवन स्तर के साथ-साथ देश के विकास से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। ऐसा इसलिए है क्योंकि दुनिया भर में तेज़ी से हो रहे सामाजिक-आर्थिक बदलावों और शिक्षा में बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण, छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन को अब यह निर्धारित करने के लिए एक पैमाना माना जाता है कि उन्हें अच्छी शिक्षा मिल रही है या नहीं। इस शोध का उद्देश्य यह पता लगाना है कि छात्रों का घरेलू जीवन उनकी शैक्षणिक उपलब्धि को किस प्रकार प्रभावित करता है। लेखक ने घरेलू जीवन और शैक्षणिक सफलता के बीच संबंधों की जाँच करने वाले अध्ययनों का गहन मूल्यांकन और चर्चा प्रस्तुत करने के लिए व्यापक साहित्य समीक्षा की है। इसका मुख्य लक्ष्य यह पता लगाना है कि पारिवारिक संरचना, माता-पिता के रिश्ते और सामाजिक-आर्थिक स्थिति जैसी विशेषताएँ छात्रों की स्कूल में सफलता की क्षमता को कैसे प्रभावित करती हैं। पारिवारिक आय और शिक्षा में निवेश, शोध द्वारा पहचाने गए उन पारिवारिक चरों के दो उदाहरण हैं जिनका बच्चों की शैक्षणिक सफलता पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

**हिको (2023)** इस अध्ययन का उद्देश्य एकल पालन-पोषण और किशोरों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर इसके प्रभाव के मुद्दे पर साक्ष्य-आधारित सुझाव प्रदान करके साहित्य में एक कमी को पूरा करना था। हमारे शोध में न केवल एकल पालन-पोषण के किशोरों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर प्रत्यक्ष प्रभाव को ध्यान में

रखा गया, बल्कि सफलता की आंतरिक प्रेरणा और सामाजिक सहायता प्रणालियों के मध्यस्थ प्रभाव के अप्रत्यक्ष प्रभाव को भी ध्यान में रखा गया। इस सर्वेक्षण में नाइजीरिया के 6 अलग-अलग राज्यों के 12 विभिन्न स्कूलों के 379 माध्यमिक विद्यालय के छात्रों को शामिल किया गया। स्मार्ट पीएलएस की सहायता से, आंशिक न्यूनतम वर्ग संरचनात्मक समीकरण मॉडल का उपयोग करके शोध ऑक्सेंडों का विश्लेषण किया गया। हमारे शोध से पता चलता है कि जिन बच्चों के माता-पिता उनके जीवन में मौजूद नहीं होते, वे शैक्षणिक रूप से प्रभावित नहीं होते। इसके अतिरिक्त, हमने पाया कि किशोरों का शैक्षणिक प्रदर्शन उनके एकल पालन-पोषण के स्तर से प्रभावित होता है, और यह संबंध सामुदायिक समर्थन से नियंत्रित होता है। व्यक्तिगत सफलता प्रेरणा को भी इस संबंध में एक मध्यस्थ चर के रूप में पहचाना गया। बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव एकल-अभिभावक वाले परिवारों में दो-अभिभावक वाले परिवारों की तुलना में अधिक स्पष्ट होता है। समझ में प्रगति के रूप में, हम आत्मनिर्णय सिद्धांत की सराहना करते हैं।

**उनाम्बा (2020)** इस शोध का उद्देश्य दो अभिभावकों और एकल अभिभावकों वाले घरों में छात्रों के गणितीय प्रदर्शन और उनके शैक्षणिक आत्म-सम्मान के बीच संबंधों की जांच करना था। अध्ययन के उद्देश्यों के अनुसार, दो शोध प्रश्न और दो शून्य परिकल्पनाएं विकसित की गई और 0.05 के महत्व स्तर पर उनका परीक्षण किया गया। अध्ययन में उपयोग की गई शोध रणनीति एक तुलनात्मक सर्वेक्षण थी। इमो राज्य के ओवेरी नगर परिषद क्षेत्र के कुल 1,267 द्वितीय वर्ष के छात्रों ने अध्ययन की जनसंख्या बनाई। प्रासंगिक डेटा इकट्ठा करने के लिए गणितीय उपलब्धि परीक्षण (MAT) और शैक्षणिक आत्म-सम्मान प्रश्नावली (ASEQ) का उपयोग किया गया था। शैक्षिक मनोविज्ञान और गणित शिक्षा के एक-एक विशेषज्ञ के साथ मापन और मूल्यांकन विशेषज्ञों ने वैधता के लिए परीक्षणों की जांच की।

### 3. शैक्षणिक उपलब्धि का महत्व

कुछ छात्र अपने व्यक्तिगत विकास के लिए शैक्षणिक उपलब्धि हासिल करने के महत्व को समझ नहीं पाते। आपकी शैक्षणिक उपलब्धियाँ उतनी ही महत्वपूर्ण हैं जितनी कि आवश्यक कौशल हासिल करना।

- करियर के नए रास्ते खोलना

उक्त शैक्षणिक उपलब्धि न केवल शैक्षिक अनुभव को समृद्ध बनाती है, बल्कि रोज़गार के कई अवसर भी प्रदान करती है। शैक्षणिक सफलता विभिन्न उद्योगों और संगठनों में प्रतिस्पर्धी पारिश्रमिक के साथ कई लाभकारी अवसर प्रदान करती है। उक्त योग्यता प्राप्त करने पर, छात्रों को कई पेशेवर अवसर

और साथ ही बेहतर वेतन पैकेज भी मिलते हैं। आज के तकनीकी-प्रधान परिवेश में, नियोक्ताओं को मजबूत शैक्षिक पृष्ठभूमि वाले कुशल कर्मचारियों की आवश्यकता होती है।

- **आत्मविश्वास का निर्माण**

शैक्षणिक सफलता बच्चों के लाभकारी विकास को बढ़ावा देती है। जब छात्र परीक्षाओं में उत्कृष्टता प्राप्त करने और विभिन्न चुनौतियों का सामना करने के लिए अथक प्रयास करते हैं, तो उन्हें उपलब्धि का अहसास होता है। अच्छी शैक्षणिक उपलब्धि प्राप्त करने से छात्रों का आत्म-सम्मान और आत्मविश्वास बढ़ता है, जिससे उन्हें उत्कृष्टता के लिए प्रयास जारी रखने की प्रेरणा मिलती है। एक मजबूत शैक्षिक ढाँचा भविष्य में छात्रों की सफलता में सहायक होता है।

- **मूल्यवान कौशल विकसित करना**

शैक्षणिक उत्कृष्टता विद्यार्थियों को समृद्ध जीवन के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण क्षमताओं को विकसित और परिष्कृत करने में सक्षम बनाती है। छात्र नेतृत्व, समय प्रबंधन, प्रभावी संचार, तार्किक तर्क और समस्या-समाधान जैसे आवश्यक जीवन कौशल विकसित करते हैं। इन प्रतिभाओं को निखारने से न केवल छात्रों की शैक्षणिक सफलता में मदद मिलती है, बल्कि उनके जीवन के कई पहलुओं में भी मदद मिलती है।

- **अच्छे कॉलेज में प्रवेश**

किसी परीक्षा में उच्च अंक प्राप्त करने से आपको अपने पसंदीदा संस्थान या विश्वविद्यालय में प्रवेश मिल सकता है। कॉलेज छात्रों के लिए व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास हेतु एक उत्कृष्ट वातावरण है। इसके अलावा, कॉलेज छात्रों को उनके चुने हुए क्षेत्रों में व्यापक ज्ञान प्राप्त करने के कई विकल्प प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान देता है। छात्रों को लगातार एक सफल जीवन के लिए आवश्यक आवश्यक जीवन कौशल विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। परिणामस्वरूप, उच्च अंक प्राप्त करने से आपको जीवन के कई पहलुओं में, विशेष रूप से अपने पसंदीदा संस्थान के चयन में, लाभ हो सकता है।

- **प्रेरित महसूस करना**

शैक्षणिक प्रदर्शन छात्रों की प्रेरणा को बनाए रखता है। परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन और अपने परिणामों से प्रेरणा प्राप्त करना अक्सर निरंतर सुधार और निरंतर उत्कृष्टता की ओर ले जाता है। शैक्षणिक

सफलता प्राप्त करने से आत्मविश्वास और प्रेरणा बढ़ती है, जिससे परिश्रमपूर्वक अध्ययन और आत्म-सुधार के प्रति प्रतिबद्धता को बढ़ावा मिलता है।

#### 4. शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारक

शैक्षणिक उपलब्धियों में भिन्नताएँ बुद्धि और व्यक्तित्व में असमानताओं से जुड़ी रही हैं। बुद्धि-लब्धि आकलनों से पता चलता है कि उच्च संज्ञानात्मक क्षमता वाले छात्र और उच्च स्तर की कर्तव्यनिष्ठा (जो परिश्रम और उपलब्धि प्राप्ति की इच्छा से जुड़ी होती है) वाले छात्र अक्सर शैक्षणिक वातावरण में उच्च स्तर की सफलता प्राप्त करते हैं। एक हालिया मेटा-विश्लेषण ने संकेत दिया है कि सामान्य बौद्धिक संलग्नता द्वारा आँकी गई मानसिक जिज्ञासा, बुद्धिमत्ता और कर्तव्यनिष्ठा के साथ-साथ शैक्षणिक सफलता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है।

बच्चों के लिए अर्ध-संरचित घरेलू शिक्षण व्यवस्था, उनकी पहली कक्षा की शुरुआत के साथ ही एक अधिक व्यवस्थित शिक्षण वातावरण में विकसित हो जाती है। प्रारंभिक शैक्षणिक सफलता, आगे की शैक्षणिक सफलता को बढ़ावा देती है।

माता-पिता द्वारा शैक्षणिक समाजीकरण से तात्पर्य उस तरीके से है जिससे माता-पिता किशोरों की क्षमताओं, कार्यों और शिक्षा के प्रति उनके दृष्टिकोण को विकसित करके उनके शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित करते हैं। माता-पिता अपने बच्चों के साथ बनाए गए वातावरण और संवाद के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रभावित करते हैं। माता-पिता की सामाजिक-आर्थिक स्थिति शैक्षणिक समाजीकरण को प्रभावित कर सकती है। उच्च शिक्षा प्राप्त माता-पिता अक्सर बौद्धिक रूप से समृद्ध शिक्षण वातावरण प्रदान करते हैं। इसके अलावा, नए अध्ययनों से पता चलता है कि माता-पिता के साथ संबंधों की गुणवत्ता किशोरों में शैक्षणिक आत्म-प्रभावकारिता के विकास को प्रभावित करती है, जो बाद में उनकी शैक्षणिक सफलता को प्रभावित करती है।

बच्चे के जीवन के शुरुआती साल भाषाई और सामाजिक क्षमताओं के विकास के लिए बेहद महत्वपूर्ण होते हैं। इन क्षेत्रों में स्कूल की तैयारी बच्चों को शैक्षणिक अपेक्षाओं के अनुकूल ढलने में मदद करती है। शैक्षिक परिवेश में सामाजिक संबंधों का महत्व सर्वविदित है, खासकर सीखने और शैक्षणिक उपलब्धि पर उनके प्रभाव के संदर्भ में। बच्चों के सामाजिक संबंधों में पारस्परिकता के गुण को बेहतर शैक्षणिक सफलता से जोड़ा गया है।

शोध से पता चलता है कि शारीरिक व्यायाम मस्तिष्क में तंत्रिका गतिविधि को बढ़ाता है, विशेष रूप से कार्यकारी प्रक्रियाओं जैसे ध्यान अवधि और कार्यशील स्मृति को बढ़ाता है, जिससे प्राथमिक विद्यालय के छात्रों और कॉलेज के नए छात्रों दोनों में शैक्षणिक उपलब्धि में सुधार होता है।

- **गैर-संज्ञानात्मक कारक**

गैर-संज्ञानात्मक विशेषताओं या प्रतिभाओं में "दृष्टिकोणों, व्यवहारों और रणनीतियों" का एक संग्रह शामिल होता है जो शैक्षणिक और व्यावसायिक उपलब्धि को सुगम बनाते हैं, जिनमें शैक्षणिक आत्म-प्रभावकारिता, आत्म-नियमन, प्रेरणा, पूर्वानुमान और लक्ष्य-निर्धारण सिद्धांत, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और दृढ़ता शामिल हैं।

समाजशास्त्री बाउल्स और गिंटिस ने 1970 के दशक में संज्ञानात्मक परीक्षणों के परिणामों से परे के मुद्दों की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए इस शब्द का निर्माण किया था। यह शब्द उन संज्ञानात्मक विशेषताओं को दर्शाता है जिनका मूल्यांकन शिक्षक परीक्षाओं और प्रश्नोत्तरी के माध्यम से करते हैं। गैर-संज्ञानात्मक प्रतिभाएँ अधिक प्रमुख होती जा रही हैं क्योंकि वे शैक्षणिक और व्यावसायिक सफलता की बेहतर व्याख्या प्रदान करती हैं।

- **प्रेरणा**

प्रेरणा किसी व्यक्ति के व्यवहार के पीछे का तर्क है। शोध बताते हैं कि बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन, प्रेरणा और दृढ़ता दिखाने वाले बच्चे बाहरी लक्ष्यों की बजाय आंतरिक लक्ष्यों को प्राथमिकता देते हैं। इसके अलावा, जो छात्र अपने पिछले या भविष्य के प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए प्रेरित होते हैं, वे अक्सर कम प्रेरित छात्रों की तुलना में बेहतर शैक्षणिक परिणाम प्राप्त करते हैं। उपलब्धि की तीव्र इच्छा रखने वाले छात्र बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन प्रदर्शित करते हैं।

- **आत्म - संयम**

शैक्षणिक संदर्भ में आत्म-नियंत्रण का संबंध आत्म-अनुशासन, आत्म-नियमन, विलंबित संतुष्टि और आवेग प्रबंधन से है। बॉमिस्टर, वोहस और टाइस ने आत्म-नियंत्रण को "अपनी प्रतिक्रियाओं को संशोधित करने, विशेष रूप से उन्हें आदर्शों, मूल्यों, नैतिकताओं और सामाजिक अपेक्षाओं जैसे मानकों के अनुरूप ढालने और दीर्घकालिक उद्देश्यों की प्राप्ति को सुगम बनाने की क्षमता" के रूप में परिभाषित किया है।

आत्म-नियंत्रण ताल्कालिक आवेगों से ऊपर दीर्घकालिक उद्देश्यों को चुनने की क्षमता है। आत्म-नियंत्रण का मूल्यांकन अक्सर स्व-प्रशासित प्रश्नावली द्वारा किया जाता है। शोधकर्ता अक्सर 2004 में टैगनी, बॉमिस्टर और बून द्वारा निर्मित आत्म-नियंत्रण पैमाने का उपयोग करते हैं।

मार्शमैलो परीक्षण के अनुदैर्घ्य परीक्षण में, शोधकर्ताओं ने दूसरे मार्शमैलो के लिए विलंब की अवधि और बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच एक संबंध की पहचान की। यह परिणाम केवल उन व्यक्तियों पर लागू था जिनके पास मार्शमैलो स्पष्ट रूप से मौजूद था और जो बिना किसी ध्यान भटकाने वाली तकनीक के बैठे थे।

उच्च नियंत्रण केंद्र, जिसके द्वारा व्यक्ति सफलता का श्रेय व्यक्तिगत निर्णय लेने और अनुशासन जैसी वांछनीय आदतों को देता है, आत्म-नियंत्रण का परिणाम है। एक मज़बूत नियंत्रण केंद्र का उच्च कॉलेजिएट GPA के साथ सकारात्मक संबंध होता है।

- **पारिवारिक संरचना**

परिवार की संरचना और भागीदारी बच्चे की शिक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। विभिन्न पारिवारिक संरचनाएँ मौजूद हैं। ये पारिवारिक संरचनाएँ बच्चे की शैक्षणिक उपलब्धि को विभिन्न तरीकों से प्रभावित करती हैं। पारिवारिक संरचना के वे तत्व जो बच्चे को प्रभावित कर सकते हैं, उनमें माता-पिता का दबाव, माता-पिता की वैवाहिक स्थिति और परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति शामिल हैं।

- **परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति**

शिक्षा से जुड़े विभिन्न प्रकार के सामाजिक-आर्थिक दबाव पारिवारिक वित्तीय स्थिति पर निर्भर करते हैं। धनी बच्चों को मिडिल स्कूल से ही चिंता के लक्षण, नशीली दवाओं के सेवन की बढ़ती प्रवृत्ति और अवसाद जैसे लक्षणों का सामना करना पड़ सकता है। इस वर्ग के उच्च उपलब्धि वाले बच्चों को अक्सर माता-पिता और समाज, दोनों की ओर से ऐसी माँगों का सामना करना पड़ता है, जो अक्सर उनके स्वास्थ्य और कल्याण की उपेक्षा करती हैं। ये परिस्थितियाँ सीखने और शैक्षणिक उपलब्धि में बाधा डालती हैं, खासकर उच्च शिक्षा में।

आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि के व्यक्तियों को कभी-कभी वित्तीय बाधाओं और संबंधित सांस्कृतिक कारकों के कारण शैक्षणिक उपलब्धि हासिल करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। हालाँकि शैक्षणिक प्रगति के मानकीकृत मूल्यांकनों, जैसे कि SAT और ACT, में बच्चों के खराब प्रदर्शन के लिए कोई एक कारण नहीं है, यह स्पष्ट है कि निम्न-आय वाले छात्र और जिले इन परीक्षाओं में खराब परिणाम

प्रदर्शित करते हैं। कुछ लोग शैक्षणिक उपलब्धि का मूल्यांकन करने वाले मूल्यांकनों और मानकों की निष्पक्षता पर सवाल उठाते हैं।

- **पाठ्येतर गतिविधियां**

संरचित पाठ्येतर या सांस्कृतिक गतिविधियों ने शैक्षणिक उपलब्धि में वृद्धि के साथ लाभकारी संबंध दिखाया है, जिसमें उपस्थिति दर में वृद्धि, स्कूल में सहभागिता, GPA, उच्चतर माध्यमिक शिक्षा, साथ ही स्कूल छोड़ने की दर और अवसाद में कमी शामिल है। इसके अलावा, संरचित पाठ्येतर गतिविधियों में भाग लेने वाले किशोरों में अनुकूल विकासात्मक प्रभाव देखे गए हैं। हाई स्कूल के खेल, विशेष रूप से शहरी बच्चों के बीच, शैक्षणिक उपलब्धि में वृद्धि से जुड़े हैं। फिर भी, खेलों में भागीदारी हाई स्कूल के छात्रों में शराब के सेवन और दुरुपयोग में वृद्धि, साथ ही अनुपस्थिति में वृद्धि से जुड़ी हुई है।

शोध से पता चलता है कि शैक्षणिक उपलब्धि और पाठ्येतर गतिविधियों में भागीदारी के बीच एक अच्छा संबंध है; फिर भी, इस संबंध के अंतर्निहित तंत्र अस्पष्ट बने हुए हैं। इसके अलावा, कई बाहरी कारक शैक्षणिक प्रदर्शन और पाठ्येतर गतिविधियों में भागीदारी के बीच संबंध को प्रभावित करते हैं। इन कारकों में नागरिक भागीदारी, पहचान का विकास, स्वस्थ सामाजिक संपर्क और व्यवहार, और मानसिक स्वास्थ्य शामिल हैं। बच्चों पर किए गए एक अन्य अध्ययन से संकेत मिलता है कि स्कूल के बाद की योजनाबद्ध गतिविधियों के माध्यम से प्राप्त अच्छा सामाजिक समर्थन और विकास, शैक्षणिक उपलब्धि के लिए फायदेमंद है। शैक्षणिक सफलता के संबंध में, कई और मानदंडों पर विचार किया जाना चाहिए।

चरों में जनसांख्यिकीय और पारिवारिक प्रभाव, व्यक्तिगत विशेषताएँ, और कार्यक्रम संसाधन और सामग्री शामिल हैं। उदाहरण के लिए, सामाजिक-आर्थिक स्थिति पाठ्येतर गतिविधियों में शामिल विद्यार्थियों की संख्या को प्रभावित करती है। इसके अलावा, यह प्रस्तावित है कि पाठ्येतर गतिविधियों में विकसित सहकर्मी संबंध और समर्थन अक्सर लोगों के शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित करते हैं। इन सभी कारकों को देखते हुए, यह समझना आवश्यक है कि शैक्षणिक उपलब्धि को नकारात्मक और सकारात्मक दोनों रूपों में कैसे देखा जा सकता है।

- **सफल शैक्षिक कार्य**

शोध अध्ययनों ने अनुभवों का विश्लेषण किया है, जिससे पता चलता है कि उच्च अनुपस्थिति वाले स्कूलों में सफल शैक्षिक कार्यों (एसईए) का एकीकरण शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ाने में योगदान देता है।

## 5. शैक्षणिक उपलब्धि पर तनाव का प्रभाव

"भावना" शब्द एक व्यक्तिपरक स्थिति है जो किसी व्यक्ति की शारीरिक प्रतिक्रियाओं और कुछ स्थितियों, क्रियाओं और घटनाओं के प्रति प्रतिक्रियाओं द्वारा परिभाषित होती है। "शैक्षणिक भावनाएँ एक छात्र की उपलब्धियों, प्रयासों और परिणामों से गहराई से जुड़ी होती हैं।" प्रारंभ में, शैक्षणिक भावनाओं को तीन अलग-अलग श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया था: सक्रिय भावनाएँ (जैसे, आनंद, गर्व और क्रोध), निष्क्रिय भावनाएँ (जैसे, शर्म), और सकारात्मक भावनाएँ (जिसमें आनंद, गर्व और आशा शामिल हैं) शिक्षा के संदर्भ में।

अध्ययनों से संकेत मिलता है कि आनंद जैसी सुखद भावनाएँ शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ाती हैं। इसके विपरीत, थकान जैसी प्रतिकूल निष्क्रियता भावनाएँ प्रेरणा को कम कर सकती हैं और सूचना प्रसंस्करण को बाधित कर सकती हैं, जो इन भावनाओं के शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले हानिकारक प्रभाव को दर्शाती हैं। छात्रों की सकारात्मक भावनाओं और उनके शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध मौजूद है, जो दर्शाता है कि संतोष, आशावाद और गर्व की भावनाएँ शैक्षणिक सफलता के संकेतक हैं। मध्यावधि परीक्षाओं में छात्रों के प्रदर्शन और गर्व, आनंद और आशा जैसी सकारात्मक सक्रिय भावनाओं के उनके अनुभव के बीच संबंध उल्लेखनीय है। सकारात्मक भावनाएं, जिनमें खुशी, आशावाद और गर्व शामिल हैं, कई परिस्थितियों में, विशेष रूप से शैक्षणिक प्रदर्शन में, शैक्षणिक सफलता के साथ लगातार सहसम्बन्धित होती हैं।

## 6. शैक्षणिक उपलब्धि पर आत्म-दक्षता का प्रभाव

शैक्षणिक योग्यताओं में आत्म-प्रभावकारिता शैक्षणिक सफलता का एक महत्वपूर्ण कारक है। यह विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता की क्षमता के बारे में उनकी मान्यताओं और धारणाओं से संबंधित है, जिसमें शैक्षणिक कार्यों को पूरा करने और विषय-वस्तु को प्रभावी ढंग से आत्मसात करने में उनका आत्मविश्वास भी शामिल है।

आत्म-प्रभावकारिता, या किसी की उपलब्धि की क्षमता में विश्वास, व्यक्ति को अधिकतम प्रयास करने के लिए प्रेरित करके प्रेरणा को प्रभावित करता है, जिससे उसकी प्रतिबद्धता, दृढ़ता और दृढ़ता बढ़ती है। कम आत्म-प्रभावकारिता वाले छात्र अपनी असफलताओं का कारण अपर्याप्त योग्यता को मानते हैं, जबकि उच्च आत्म-प्रभावकारिता वाले छात्र अपनी असफलताओं का कारण अपर्याप्त प्रयास को मानते हैं। परिणामस्वरूप, आत्म-प्रभावकारिता कार्य चयन और कार्य दृढ़ता, दोनों को प्रभावित करती है। जिन छात्रों में अपनी प्रतिभा का आत्म-मूल्यांकन अपर्याप्त होता है, वे चिंता के कारण अपनी शैक्षणिक

जिम्मेदारियों से बचने, टालमटोल करने और अंततः उन्हें त्यागने की अधिक संभावना रखते हैं। इसके विपरीत, शोध के आँकड़े बताते हैं कि परासंज्ञानात्मक शिक्षण रणनीतियाँ आत्म-प्रभावकारिता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच के संबंध को प्रभावित कर सकती हैं। "विशेष रूप से, चुनौतियों का सामना करते समय, उच्च आत्म-प्रभावकारिता वाले छात्र अपने समकक्षों की तुलना में अधिक दृढ़ता और परिश्रम प्रदर्शित करते हैं।"

"यद्यपि आत्म-प्रभावकारिता किए गए प्रयास की मात्रा को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है, साक्ष्य दर्शाते हैं कि उच्च आत्म-प्रभावकारिता वाले छात्र कम आत्म-प्रभावकारिता वाले छात्रों की तुलना में बेहतर गुणवत्ता का प्रयास प्रदर्शित करते हैं।" ये बच्चे उन्नत संज्ञानात्मक और परासंज्ञानात्मक प्रसंस्करण प्रक्रियाओं का उपयोग करते हैं जो सीखने और शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ाती हैं। परिणामस्वरूप, उनमें आत्म-प्रभावकारिता की प्रबल भावना होती है। इसके विपरीत, कम आत्म-प्रभावकारिता वाले छात्र कम चुनौतीपूर्ण परियोजनाओं का चयन करके और गहन शिक्षण विधियों की बजाय सतही तरीकों को तरजीह देकर असफलता से बचने का प्रयास करते हैं।

## 7. शैक्षणिक उपलब्धि के आकलन के तरीके

शैक्षणिक उपलब्धि का आकलन करने का प्रमुख तरीका शिक्षकों द्वारा तैयार की गई परीक्षाएँ हैं। यह अनौपचारिक मापदंड पहले से सिखाए गए विशिष्ट लक्ष्यों की पहचान करता है और यह आकलन करता है कि छात्रों ने इन उद्देश्यों में किस हद तक महारत हासिल की है।

मानक कक्षा मूल्यांकन विधियों के अलावा, स्कूल अक्सर छात्रों की सफलता के व्यापक मूल्यांकन पर निर्भर रहे हैं। मूल्यांकन तकनीकें कुछ विशिष्ट व्यक्तियों या विद्यार्थियों के पूरे समूह पर केंद्रित हो सकती हैं। मूल्यांकन तकनीकें, जब व्यक्तियों पर केंद्रित होती हैं, तो उनका उद्देश्य प्रत्याशित उपलब्धि स्तरों के सापेक्ष कौशल विकास के अर्जन, धारण और उन्नयन को मापकर छात्र की उपलब्धि का मूल्यांकन करना होता है। समूहों पर ध्यान केंद्रित करते समय, निर्णय कार्यक्रम मूल्यांकन के परिणामों पर अधिक निर्भर करता है, जो इस बात का आकलन करता है कि स्कूल या स्कूल जिले सामूहिक रूप से व्यापक लक्ष्यों को किस हद तक प्राप्त करते हैं।

शैक्षणिक उपलब्धि मूल्यांकन विधियों को चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

- मानकीकृत मानदंड-संदर्भित मूल्यांकन का उद्देश्य समान आयु या कक्षा स्तर के सहपाठियों की तुलना में छात्र की स्थिति का मूल्यांकन करना है। मूल्यांकन के परिणाम अक्सर मानक

अंकों के रूप में दिए जाते हैं, जो किसी निर्दिष्ट समूह के नमूने के सापेक्ष छात्र के प्रदर्शन का मूल्यांकन करने में सहायक हो सकते हैं।

- मानदंड-संदर्भित मूल्यांकन पूर्व-निर्धारित मानदंड के सापेक्ष कुछ योग्यताओं की प्राप्ति का मूल्यांकन करने के लिए संरचित होते हैं। प्रशिक्षक द्वारा निर्मित मूल्यांकन इन मापन प्रकारों के सबसे आदर्श उदाहरणों में से एक हैं। इन मूल्यांकनों के अंक अक्सर अर्जित योग्यताओं के प्रतिशत के रूप में व्यक्त किए जाते हैं।
- प्रदर्शन-उन्मुख मूल्यांकन मापदंड, उत्पन्न सामग्री द्वारा दर्शाई गई छात्र की अर्जित क्षमताओं को दर्शाने के लिए हैं। ऐसी परिस्थितियों में जो उस परिवेश में होने वाली घटनाओं को प्रेरित करती हैं जहाँ क्षमताओं का विकास आवश्यक है। इन मापकों में प्रयोगशाला प्रदर्शन, कलात्मक प्रदर्शन, लेखन नमूने, रोज़गार मूल्यांकन प्रणालियाँ, और अन्य क्षमताएँ शामिल होंगी जो सूचना के एकीकरण और अनुप्रयोग के माध्यम से सीखने को दर्शाती हैं।
- पाठ्यक्रम-आधारित मूल्यांकन में मूल्यांकन के आधार के रूप में पूर्वनिर्धारित पाठ्यक्रम लक्ष्यों के आधार पर छात्र के प्रदर्शन का मूल्यांकन करना शामिल है। पाठ्यक्रम-आधारित मूल्यांकन के कई रूप मौजूद हैं, और ये सभी पाठ्यक्रम से सीधे प्राप्त छात्र प्रगति के निरंतर मूल्यांकन पर केंद्रित हैं।

## 8. पारिवारिक वातावरण

असामान्य रूप-रंग वाले व्यक्तियों के कल्याण और सहयोग के लिए पारिवारिक परिवेश आवश्यक है। नैदानिक अनुभव बताते हैं कि बच्चे, किशोर और वयस्क उन परिवारों में बेहतर जीवन जीते हैं जो सुखी और संतोषजनक जीवन के लिए शारीरिक सुंदरता के अलावा अन्य कारकों को प्राथमिकता देते हैं। माता-पिता को अपने बच्चों का ध्यान अधिक सकारात्मक गुणों की ओर आकर्षित करने और उनकी स्वतंत्रता को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

परिवारों में संवाद संबंधी चुनौतियों से निपटने के लिए हस्तक्षेप की आवश्यकता हो सकती है। बच्चे अक्सर अपने मुद्दों पर खुलकर बात करने में हिचकिचाहट दिखाते हैं, इस डर से कि इससे उनके माता-पिता की भावनाओं को ठेस पहुँच सकती है, जबकि माता-पिता भी यह मान सकते हैं कि एक दोस्ताना माहौल बनाए रखना ज़रूरी है। परिवारों को इलाज के विकल्प चुनने में सहायता की आवश्यकता हो सकती है, जैसे कि अस्पताल में भर्ती होने के समय। पीड़ित परिवार के सदस्य को दिए जाने वाले

अतिरिक्त समय, प्रयास और ध्यान के कारण भाई-बहनों को प्रेशानी हो सकती है। कई मुद्दों के लिए, सहानुभूतिपूर्वक सुनना पर्याप्त हो सकता है। अतिरिक्त पारिवारिक समस्याएँ अधिक जटिल होती हैं और उन्हें विशेषज्ञ ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

### **पारिवारिक वातावरण के सिद्धांत**

पारिवारिक प्रणाली सिद्धांत यह मानता है कि परिवार एक भावनात्मक इकाई है जिसमें परस्पर जुड़े लोग होते हैं जो एक-दूसरे के व्यवहार, भावनाओं और समग्र कल्याण को प्रभावित करते हैं। पारिवारिक गतिशीलता और कार्यप्रणाली को समझने के लिए, यह परिवार के भीतर संबंधों और अंतःक्रियाओं के महत्व को रेखांकित करता है।

**पारिस्थितिक तंत्र सिद्धांत:** यह सिद्धांत मानव विकास पर परिवार जैसी कई पर्यावरणीय प्रणालियों के प्रभाव पर ज़ोर देता है। यह इस बात पर ज़ोर देता है कि व्यक्ति कई प्रणालियों में अंतर्निहित होते हैं।

**परिवार विकास सिद्धांत:** यह सिद्धांत इस बात की जाँच करता है कि परिवार विभिन्न विकासात्मक कार्यों और जीवन में बदलावों, जैसे विवाह, पितृत्व और वृद्धावस्था, के साथ कैसे तालमेल बिठाते हैं। यह परिवारों के विकास और उनके भीतर भूमिकाओं और रिश्तों में बदलाव को समझने के महत्व पर ज़ोर देता है।

### **पारिवारिक वातावरण पर परिप्रेक्ष्य**

- मनोवैज्ञानिक विकास:** व्यक्तित्व विशेषताओं, लगाव शैलियों और भावनात्मक विनियमन के विकास पर परिवार का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। मनोवैज्ञानिकों के बीच यह एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। एक असंतुलित या हिंसक घरेलू वातावरण चिंता, अवसाद या लगाव संबंधी विकारों जैसी मनोवैज्ञानिक समस्याओं को जन्म दे सकता है, जबकि एक पोषणकारी और सहायक पारिवारिक वातावरण सुरक्षा और आत्म-सम्मान की भावना को बढ़ावा देता है।
- स्वास्थ्य और अच्छाई:** पारिवारिक वातावरण की गुणवत्ता भी शारीरिक स्वास्थ्य परिणामों को प्रभावित कर सकती है। एक परिवार का समग्र कल्याण एक पोषणकारी वातावरण और नियमित भोजन, व्यायाम और पर्याप्त नींद सहित स्वस्थ दिनचर्या से बेहतर होता है। इसके विपरीत, तनावपूर्ण या अव्यवस्थित पारिवारिक वातावरण से मोटापा, नशीली दवाओं का दुरुपयोग या दीर्घकालिक बीमारियाँ जैसी स्वास्थ्य समस्याएँ और भी बदतर हो सकती हैं।

- पारस्परिक संपर्क:** परिवार के भीतर की गतिशीलता और अंतःक्रियाएँ व्यक्तियों द्वारा अपने निकट परिवार के बाहर के लोगों के साथ बनाए जाने वाले संबंधों के लिए एक ढाँचे का काम करती हैं। मित्रों, प्रेम-साथियों और सहकर्मियों के साथ मज़बूत पारस्परिक संबंध, सहानुभूति, सम्मान और प्रभावी संचार की विशेषता वाले रचनात्मक पारिवारिक अंतःक्रियाओं के आधार पर स्थापित होते हैं।
- लचीलापन:** एक पोषणकारी और स्नेही पारिवारिक वातावरण व्यक्ति को विपरीत परिस्थितियों से बचा सकता है और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में लचीलापन बढ़ा सकता है। पारिवारिक परिवेश में विकसित मज़बूत पारिवारिक संबंध, भावनात्मक सुदृढ़ीकरण और सामना करने की रणनीतियाँ व्यक्ति को कठिनाइयों का सामना करने और बाधाओं से पार पाने में सक्षम बनाती हैं।

## **पारिवारिक वातावरण का प्रभाव**

पारिवारिक वातावरण लोगों के शारीरिक, भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक विकास को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है; इसके बाद के कुछ परिणाम इस प्रकार हैं:

- भावनात्मक कल्याण:** व्यक्ति का भावनात्मक स्वास्थ्य एक पोषणकारी और सहयोगी पारिवारिक वातावरण में पोषित होता है। ऐसे वातावरण में पले-बढ़े बच्चों में अक्सर उच्च आत्म-सम्मान, बेहतर भावनात्मक विनियमन कौशल और विपरीत परिस्थितियों का सामना करने की क्षमता अधिक होती है।
- सामाजिक विकास:** बच्चों का पहला समाजीकरण अनुभव उनके परिवारों में होता है। पारिवारिक वातावरण व्यक्ति की सामाजिक क्षमताओं, पारस्परिक संबंधों और अपने निकट परिवार के बाहर संबंधों को प्रबंधित करने की क्षमता को प्रभावित करता है।
- ज्ञान संबंधी विकास:** परिवार के भीतर के रिश्ते उसके सदस्यों के संज्ञानात्मक विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। शिक्षा, अन्वेषण और बौद्धिक जुड़ाव के अवसर प्रदान करने वाला सहायक वातावरण संज्ञानात्मक विकास और शैक्षणिक सफलता को बढ़ावा देता है।
- पहचान निर्माण:** किसी व्यक्ति की पहचान की भावना उसके घरेलू परिवेश से काफ़ी हद तक प्रभावित होती है। व्यक्ति की आत्म-धारणा और सामाजिक भूमिकाएँ पीढ़ियों से चली आ रही सांस्कृतिक, धार्मिक और पारिवारिक धारणाओं से प्रभावित होती हैं।

## पारिवारिक वातावरण का महत्व

पारिवारिक वातावरण व्यक्ति के विकास, व्यवहार और कल्याण को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। कई मूलभूत कारक पारिवारिक वातावरण के महत्व को रेखांकित करते हैं:

- भावनात्मक समर्थन:** पारिवारिक वातावरण सुरक्षा और भावनात्मक संबल की भावना प्रदान करता है। चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में, परिवार के सदस्य सहारा, प्यार और सांत्वना प्रदान करते हैं। एक पोषित पारिवारिक वातावरण में पले-बढ़े व्यक्ति अधिक लचीले होते हैं और जीवन की चुनौतियों का सामना करने में अधिक कुशल होते हैं।
- पहचान निर्माण:** किसी व्यक्ति का आत्म-सम्मान और पहचान उसके परिवार द्वारा निर्धारित होती है। जातीय, धार्मिक और सांस्कृतिक मूल सहित पारिवारिक संबंध, व्यक्ति की पहचान निर्माण को महत्वपूर्ण रूप से आकार देते हैं। व्यक्ति की विरासत और अपनेपन की भावना पारिवारिक परंपराओं, आख्यानों और रीति-रिवाजों से सुदृढ़ होती है।
- रोल मॉडलिंग:** परिवार के सदस्य उचित व्यवहार और मानसिकता के आदर्श प्रस्तुत करते हैं। किशोर अपने माता-पिता और भाई-बहनों के कार्यों और वृष्टिकोणों को देखकर और उनका अनुकरण करके अपने विश्वास और व्यवहार विकसित करते हैं। परिवार में सकारात्मक भूमिका निभाने से नैतिक विकास और सामाजिक व्यवहार को बढ़ावा मिलता है।
- अंत वैयक्तिक संबंध:** व्यक्तियों के भविष्य के पारस्परिक संबंध उनके पारिवारिक संबंधों के आधार पर निर्धारित होते हैं। सकारात्मक पारिवारिक संबंध सहयोग, सहानुभूति और संचार कौशल विकसित करते हैं, जो परिवार के बाहर स्वस्थ संबंध स्थापित करने के लिए आवश्यक हैं।
- सांस्कृतिक संचरण:** परंपराएँ, मूल्य और मान्यताएँ परिवारों के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचती हैं। परिवार सांस्कृतिक ज्ञान और व्यवहारों को संप्रेषित करते हुए, कहानियों, उत्सवों और सामूहिक अनुभवों के माध्यम से सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करते हैं।

## 9. निष्कर्ष

वर्तमान अध्ययन में, एकल और संयुक्त परिवारों के पुरुष छात्रों के बीच शैक्षणिक उपलब्धि के मापों में अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है, जो दर्शाता है कि एकल परिवारों और संयुक्त परिवारों के पुरुष छात्र शैक्षणिक उपलब्धि के चर पर समान हैं। अध्ययन में यह भी बताया गया कि संयुक्त परिवारों

के छात्र और छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई अंतर नहीं है। उनके बीच का अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है, जो दर्शाता है कि शैक्षणिक उपलब्धि के पैमाने पर वे समान हैं।

## संदर्भ

1. गिरि, डॉ. दिलीप (2014). "संयुक्त और एकल परिवारों के माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर उनके मूल्यों और समायोजन के संबंध में एक तुलनात्मक अध्ययन।"
2. बंजा न्सोम्वे-ए-नफंकवा, यूस्टेचे और एनगुटा, जोनाथन (2023)। तलाकशुदा और अविवाहित माता-पिता वाले छात्रों के बीच शैक्षणिक प्रदर्शन का तुलनात्मक अध्ययन। यूस्टेचे बंजा न्सोम्वे-ए-नफंकवा। प्यूचरिटी एजुकेशन। 10.57125/fed.2023.12.25.04।
3. ज़िंग, जुओरान (2023)। साहित्य विश्लेषण के आधार पर पता लगाएँ कि पारिवारिक कारक छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन को कैसे प्रभावित करते हैं। शिक्षा, मानविकी और सामाजिक विज्ञान जर्नल। 10. 91-98. 10.54097/ehss. v10i.6897.
4. हिको, मैगडलीन और एस, अयहान और बेसन, इंजिन। (2023)। एकल पालन-पोषण और छात्रों का शैक्षणिक प्रदर्शन। दक्षिण अफ्रीकी शिक्षा पत्रिका। 43. 1-9. 10.15700/saje. v43n4a2297।
5. उनाम्बा, उनाम्बा और कालू ओकवारा और जॉर्जलीन, इबे (2020)। दो और एकल अभिभावक परिवारों के विद्यार्थियों में गणित में शैक्षणिक आत्म-सम्मान और शैक्षणिक उपलब्धि के स्तरों का तुलनात्मक अध्ययन। मलिकुस्सलाह जर्नल ऑफ़ मैथमेटिक्स लर्निंग (एमजेएमएल)। 3. 70. 10.29103/एमजेएमएल. v3i2.3172.
6. ब्रायमन, ए. और बेल, ई. (2007). बिज़नेस रिसर्च मेथड्स. ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, यूएसए.
7. चेओवा, जी., अनसोंग, डी., और ओसेई-अकोतो, आई. (2012). घाना में माता-पिता की भागीदारी और शैक्षणिक प्रदर्शन. युवा सुरक्षा शोध संक्षिप्त संख्या 12-42.
8. डोनकोर, ए.के. (2010). घाना में शिक्षा में अभिभावकों की भागीदारी: एक निजी प्राथमिक विद्यालय का मामला. शिक्षा में अभिभावकों के बारे में अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 4(1), 23-38

9. एपस्टीन, जेएल, और सैंडर्स, एमजी (2006)। बदलाव की संभावनाएँ: शिक्षकों को स्कूल, परिवार और सामुदायिक भागीदारी के लिए तैयार करना। *पीबॉडी जर्नल ऑफ एजुकेशन*, 81(2), 81–120।
10. एपस्टीन, जेएल (2001) स्कूल, परिवार और सामुदायिक साझेदारी, शिक्षकों को तैयार करना और स्कूल में सुधार करना, बोल्डर, सह: वेस्ट-व्यू।
11. एंटिमैन, ए., हॉल, ए. और बंडी, डी. (1999)। ग्रामीण घाना में स्कूल नामांकन पैटर्न: बच्चों की बुनियादी स्कूली शिक्षा तक पहुँच पर स्थान, लिंग, आयु और स्वास्थ्य के प्रभाव का एक तुलनात्मक अध्ययन। *तुलनात्मक शिक्षा*, 35(3), पृष्ठ 331-349।
12. घाना राष्ट्रीय बाल आयोग (GNCC) (2000) घाना के बच्चे: बच्चों का विश्लेषण। अकरा: GNCC
13. हाशिम, आई. (2005). बच्चों के स्वतंत्र प्रवास और शिक्षा के बीच संबंधों की खोज: घाना से साक्ष्य। कार्यपत्र T-12. ब्राइटन: ससेक्स प्रवासन अनुसंधान केंद्र
14. हैरिस, ए., और क्रिसपील्स, जे.एच. (सं.) (2006)। स्कूलों और शैक्षिक प्रणालियों में सुधार: अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य। लंदन: रूटलेज
15. हेथरिंगटन, ई.एम., और केली, जे. (2002). बेहतर या बदतर: तलाक पर पुनर्विचार. डब्ल्यू. डब्ल्यू. नॉर्टन एंड कंपनी.